सभ्यता और संस्कृति

मैकाइवर भौतिक संस्कृति के लिए सभ्यता और अभौतिक संस्कृति के लिए संस्कृति शब्द का प्रयोग करता है। मैकाइवर संस्कृति को विकास की अंतिम अवस्था अर्थात सभ्यता का उच्च स्तर मानता है।

सभ्यता शब्द लैटिन विशेषण सभ्य से आया है, जो नागरिक के संदर्भ में है। नागरिक स्वेच्छा से राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक संगठनों के साथ मिलकर- वे एक साथ विलय करते हैं जो कि बड़े समुदाय के हित में है।

इसका मूल अर्थ वह तरीका या स्थिति है जिसमें पुरुष नागरिक के रूप में एक साथ रहते हैं। एक सभ्यता एक जटिल समाज या संस्कृति समूह है जो कृषि पर निर्भरता, लंबी दूरी के व्यापार, सरकार के राज्य रूप, व्यावसायिक विशेषज्ञता शहरीकरण और वर्ग स्तरीकरण की विशेषता है। इस मूल तत्वों के साथ, सभ्यता को अक्सर कई माध्यमिक तत्वों के संयोजन द्वारा चिह्नित किया जाता है, जिसमें एक विकसित परिवहन प्रणाली, लेखन, माप के मानक, औपचारिक कानूनी प्रणाली, महान कला शैली, स्मारकीय वास्तुकला, गणित परिष्कृत धातु विज्ञान और खगोल विज्ञान शामिल हैं।

एक सभ्यता एक जटिल मानव समाज है जिसमें सांस्कृतिक और तकनीकी विकास की कुछ विशेषताएं हो सकती हैं। यह शहरी विकास, सामाजिक स्तरीकरण सरकार का एक रूप और प्राकृतिक बोली जाने वाली भाषा से परे संचार की प्रतीकात्मक प्रणाली की विशेषता वाला एक जटिल समाज है। सभ्यता अतिरिक्त विशेषताओं जैसे कि केंद्रीकरण, पौधे और पशु प्रजातियों (मानव सहित), श्रम की विशेषज्ञता, सांस्कृतिक रूप से प्रगति की विचारधाराओं, स्मारकीय वास्तुकला, कराधान, खेती और विस्तारवाद पर सामाजिक निर्भरता जैसी अतिरिक्त विशेषताओं से जुड़ी हुई है।

विद्वानों एवं कोशों के अनुसार सभ्यता की परिभाषाएँ –

- जर्मन शब्दकोश: सभ्यता वह अवस्था है, जिसके द्वारा बर्बरता के लोग संस्कृति, उद्योग, कला, विज्ञान और नश्वरता के क्षेत्र में व्यवस्थित रूप से प्रवेश करते हैं।
- टेलर-सभ्यता मानव जाति की वह विकसित अवस्था है, जिसमें उच्चकोटि की व्यक्तिगत सामाजिक संस्था पाई जाती है, जिसका उद्देश्य मनुष्य के गुण, बल और सुख में वृद्धि करना है।.
- मैकाइवर और पेज: संपूर्ण तंत्र और संगठन जिसे मनुष्य ने अपने जीवन की स्थिति को नियंत्रित करने के प्रयास में तैयार किया है। जैसे, टाइपराइटर, टेलीफोन, प्रेस, फैक्ट्री, बैंक, डाकघर, परिवहन, हथियार आदि।

सभ्यता के लक्षण

- लक्षणों के आधार पर अलग-अलग सभ्यताएँ: सभ्यता को उनके निर्वाह के साधनों, आजीविका के प्रकारों, बस्तियों के पैटर्न, सरकार के रूपों, सामाजिक स्तरीकरण, आर्थिक व्यवस्था, साक्षरता और अन्य सांस्कृतिक विशेषताओं के आधार पर अलग-अलग किया गया है।
- सभ्यताएँ निर्वाह के लिए कृषि पर निर्भर रही हैं
- अलग-अलग आवास पैटर्न: सभ्यताओं के अन्य समाजों से स्पष्ट रूप से अलग-अलग निपटान पैटर्न हैं।
- जटिल राजनीतिक संरचना: अन्य समाजों की तुलना में सभ्यताएं राज्य नामक जटिल राजनीतिक संरचना में स्थानांतरित हो गई हैं। सामाजिक वर्गों के बीच अधिक अंतर है। शासक वर्ग आमतौर पर शहरों में केंद्रित होता है, सरकार या नौकरशाही के कार्यों के माध्यम से अधिक अधिशेष और व्यायाम पर नियंत्रण रखता है।

- स्वामित्व के अधिक जटिल पैटर्न प्रदर्शित करें: एक स्थान पर रहने से लोगों को खानाबदोश लोगों की तुलना में अधिक व्यक्तिगत संपत्ति जमा करने की अनुमति मिलती है। कुछ लोग ज़मीन जायदाद या ज़मीन का निजी स्वामित्व भी हासिल कर लेते हैं।
- लेखन का विकास

सभ्यता के प्रमुख लक्षण

- उन्नत शहर - पहली सभ्यताओं के जन्मस्थान
- विशिष्ट श्रमिक - शहरों के विकास के लिए अधिक कुशल श्रमिकों की आवश्यकता होती है
- जटिल संस्थाएँ - नेता, आदेश गीत लोगों को बनाए रखने के लिए उभरे
- रिकॉर्ड-कीपिंग - रिकॉर्ड रखरखाव एक जटिल अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण है
- उन्नत प्रौद्योगिकी - एक नई उभरती हुई अर्थव्यवस्था के लिए समस्या समाधान उपकरण और तकनीकें

- सभ्यता को आसानी से स्थानांतरित और फैलाया जा सकता है।
- सभ्यता संस्कृति के विकास के उच्च स्तर को अभिव्यक्त करती है।
- सभ्यता में जो परिवर्तन होता है, वह तात्कालिक परिवर्तन होता है।
- मनुष्य द्वारा निर्मित भौतिक वस्तुएँ, सभ्यता में सम्मिलित हैं।
- सभ्यता अमूर्त है।
- सभ्यता प्रगतिशील होती है और हमेशा आगे बढ़ती है।

संस्कृति

यह पारंपरिक विश्वासों और मूल्यों का एक समूह है जो किसी दिए गए समाज में प्रसारित और साझा किया जाता है। यह जीवन का तरीका और सोच पैटर्न, भाषण क्रिया और कलाकृतियां हैं जो पीढ़ी से पीढ़ी तक चली जाती हैं। हालाँकि, यह मनुष्य की सीखने और ज्ञान को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने की क्षमता पर निर्भर है।

अंग्रेजी शब्द 'कल्चर' लैटिन शब्द पंथ या कल्टस से लिया गया है जिसका अर्थ है जुताई, या खेती करना या परिष्कृत करना और पूजा करना। संक्षेप में, इसका अर्थ है किसी वस्तु को इस हद तक विकसित करना और परिष्कृत करना कि उसका अंतिम उत्पाद हमारी प्रशंसा और सम्मान जगाए। यह व्यावहारिक रूप से संस्कृत भाषा की 'संस्कृति' के समान है।

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A unit of RACE) YOUR SUCCESS OUR PRIORITY

विद्वानों के अनुसार संस्कृति की परिभाषाएँ

- हर्सकोविट्स हमें बताते हैं कि, "संस्कृति मानव है=पर्यावरण का निर्मित हिस्सा है"।
- मैकाइवर "संस्कृति कला में, साहित्य में, धर्म में, मनोरंजन और आनंद में हमारे दैनिक व्यवहार में हमारे रहन-सहन और सोच के तरीकों में स्वयं की प्रकृति की अभिव्यक्ति है।"
- टेलर "संस्कृति वह जटिल संपूर्णता है जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, कानून, नैतिकता, रीति-रिवाज और समाज के एक सदस्य के रूप में मनुष्य द्वारा अर्जित अन्य क्षमताओं और आदतों का समावेश होता है।"
- लैंडिस "संस्कृति वह दुनिया है जिसमें एक व्यक्ति जन्म से मृत्यु तक रहता है, चलता है और अस्तित्व बनाए रखता है"।

संस्कृति जीवन जीने का तरीका है, जो खाना आप खाते हैं, जो कपड़े आप पहनते हैं, जो भाषा आप बोलते हैं और जिस भावना की आप पूजा करते हैं, ये सब संस्कृति के पहलू हैं। यह उस तरीके को दर्शाता है जिसमें हम सोचते हैं और कार्य करते हैं, जिसमें वे चीजें भी शामिल हैं जिन्हें हमने समाज के सदस्यों के रूप में हासिल किया है। अतः समाज के सदस्य के रूप में मनुष्य की सभी उपलब्धियों को संस्कृति कहा जा सकता है। कला, संगीत, साहित्य, धर्म, दर्शन और विज्ञान सभी संस्कृति के पहलू हैं।

संस्कृति के घटक

- आस्था
- मान
- प्रथाएँ
- रिवाज
- भाषा और प्रतीक
- कहानियों
- आर्थिक प्रणाली
- राजनीतिक प्रणाली
- कला और नृत्य

संस्कृति के लक्षण

- संस्कृति सीखी जाती है: संस्कृति आमतौर पर विरासत में नहीं मिलती है लेकिन इसे सीखा और हासिल किया जाना चाहिए।
- संस्कृति साझा है: संस्कृति सामाजिक रूप से साझा है, सामाजिक संपर्क और निर्माण पर आधारित है। यह अपने आप मौजूद नहीं हो सकता। इसे समाज के सदस्यों द्वारा साझा किया जाना चाहिए।
- संस्कृति परिवर्तन: ज्ञान, विचार या परंपराएं हैं जो खो जाती हैं क्योंकि नए सांस्कृतिक लक्षण जुड़ जाते हैं। समय बीतने के साथ विशेष संस्कृति के भीतर सांस्कृतिक परिवर्तन की संभावनाएँ हैं।
- संस्कृति गतिशील है: कोई संस्कृति स्थायी स्थिति पर नहीं रहती है। नए विचारों और नई तकनीकों के जुड़ने से संस्कृति लगातार बदल रही है।
- संस्कृति हमें अनुमेय व्यवहार पैटर्न की एक सीमा प्रदान करती है: इसमें शामिल है कि एक गतिविधि कैसे आयोजित की जानी चाहिए, एक व्यक्ति को उचित तरीके से कैसे कार्य करना चाहिए।
- संस्कृति संचयी है
- संस्कृति में निहित है सामाजिक गुण संस्कृति किसी व्यक्ति विशेष की देन नहीं है, बल्कि यह पूरे समाज की देन है। समाज के अभाव में संस्कृति की कल्पना नहीं की जा सकती। संस्कृति सामूहिक आदतों, व्यवहारों और अनुभवों का उत्पाद है।
- संस्कृति समूह के लिए आदर्श है
- संस्कृति मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति करती है
- संस्कृति में अनुकूलन की क्षमता होती है
- मानव व्यक्तित्व के निर्माण में संस्कृति मौलिक है: एक इंसान को एक सांस्कृतिक वातावरण में लाया जाता है। जन्म के बाद बच्चा अपनी संस्कृति को सीखता है और उसे आत्मसात करता है। एक संस्कृति में पले-बढ़े व्यक्ति का व्यक्तित्व दूसरी संस्कृति के व्यक्ति से भिन्न होता है।

<u>भौतिक संस्कृति-</u> इसमें मानव निर्मित वस्तुएँ शामिल हैं

भौतिक संस्कृति के लक्षण

- भौतिक संस्कृति संचयी है, इसलिए इसके अंग लगातार बढ़ रहे हैं।

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A unit of RACE)

- भौतिक संस्कृति मूर्त है, अर्थात इसे मापा जा सकता है।
- भौतिक संस्कृति की उपयोगिता और लाभ का मूल्यांकन आसान है।
- भौतिक संस्कृति में परिवर्तन तत्काल होते हैं।
- इसे स्थानांतरित किया जा सकता है।

<u>अभौतिक संस्कृति</u>

गैर-भौतिक संस्कृति में हमारे द्वारा उपयोग किए जाने वाले शब्द, हम जो भाषा बोलते हैं, हमारे विश्वास, हमारे द्वारा संजोए गए मूल्य और मनाए गए सभी समारोह शामिल हैं। गैर-भौतिक संस्कृति समाजीकरण और सीखने की प्रक्रिया के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी पारित की जाती है।

गैर-भौतिक संस्कृति के लक्षण

- अभौतिक संस्कृति अमूर्त या अमूर्त होती है, अर्थात इसे मापा नहीं जा सकता।
- अभौतिक संस्कृति जटिल होती है।
- गैर-भौतिक संस्कृति की उपयोगिता और लाभों का मूल्यांकन भौतिक वस्तुओं के मूल्यांकन के समान प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है।
- अभौतिक संस्कृति में परिवर्तन बहुत धीमे होते हैं।
- अभौतिक संस्कृति मानव के आध्यात्मिक और आंतरिक जीवन से संबंधित है।

<u>संस्कृति की अवधारणा</u>

संस्कृति की कई अवधारणाएँ हैं जिनमें उनके बीच कई अंतर भी शामिल हैं-

- सांस्कृतिक सापेक्षवाद: सांस्कृतिक सापेक्षवाद एक संस्कृति को अपनी संस्कृति के लेंस के माध्यम से देखने के बजाय अपने स्वयं के मानकों द्वारा मूल्यांकन करने का अभ्यास है। सांस्कृतिक सापेक्षवाद का अभ्यास करने के लिए एक खुले दिमाग और नए मूल्यों और मानदंडों पर विचार करने और यहां तक कि अनुकूल होने की इच्छा की आवश्यकता होती है। हालांकि, एक नई संस्कृति के बारे में अंधाधुंध तरीके से सब कुछ गले लगाना हमेशा संभव नहीं होता है।
- जातीयतावाद: शाब्दिक रूप से, 'एथनो' का अर्थ लोग हैं। इसलिए, लोगों को एक निश्चित दृष्टिकोण या चीज से चिपकाना या केंद्रित करना नृजातीयतावाद कहलाता है। यह शब्द 1906 में एक प्रसिद्ध अमेरिकी समाजशास्त्री डब्ल्यूजी सुमनेर द्वारा गढ़ा गया था, जो इन-ग्रुप्स और आउट-ग्रुप्स के बीच पूर्वाग्रहपूर्ण दृष्टिकोण का वर्णन करता था। मानवविज्ञानियों ने इस शब्द का प्रयोग अपने स्वयं के रेटिंग पैमानों का उपयोग करके अपनी संस्कृति के संदर्भ में अन्य संस्कृतियों के प्रति लोगों के मन के झुकाव का विश्लेषण करने के लिए किया।
- Xenocentrism: Xenocentrism ethnocentrism के विपरीत है, और इस विश्वास को संदर्भित करता है कि एक और संस्कृति अपने से बेहतर है। (ग्रीक मूल शब्द xeno का उच्चारण "ZEE-no," का अर्थ "अजनबी" या "विदेशी अतिथि" होता है।) एक विनिमय छात्र जो विदेश में एक सेमेस्टर के बाद घर जाता है या एक समाजशास्त्री जो क्षेत्र से लौटता है, के साथ जुड़ना मुश्किल हो सकता है। अपनी खुद की संस्कृति के मूल्यों का अनुभव करने के बाद वे जीने का एक अधिक ईमानदार या अच्छा तरीका मानते हैं।
- सांस्कृतिक पुनरुत्पादन: सांस्कृतिक पुनरुत्पादन एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से पीढ़ियों में संस्कृति का पुनरुत्पादन किया जाता है, विशेष रूप से प्रमुख संस्थानों के सामाजिक प्रभाव के माध्यम से।

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams

सांस्कृतिक पुनरुत्पादन सामाजिक पुनरुत्पादन की एक बड़ी प्रक्रिया का हिस्सा है जिसके माध्यम से पूरे समाज और उनकी सांस्कृतिक, संरचनात्मक और पारिस्थितिक विशेषताओं को एक ऐसी प्रक्रिया के माध्यम से पुनः प्रस्तुत किया जाता है जिसमें निश्चित रूप से सामाजिक परिवर्तन की एक निश्चित मात्रा शामिल होती है।

- सांस्कृतिक वंचन: सांस्कृतिक वंचन एक ऐसा शब्द है जो पर्यावरण में कुछ अपेक्षित और स्वीकार्य सांस्कृतिक घटनाओं की अनुपस्थिति का उल्लेख करता है, जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति समाज के संदर्भ में सबसे उपयुक्त तरीके से संवाद करने और प्रतिक्रिया करने में विफल रहता है। इस अवधारणा का आकलन करने में आमतौर पर भाषा अधिग्रहण और भाषा का उपयोग किया जाता है।
- गरीबी की संस्कृति: लुईस ने गरीबी की संस्कृति की अवधारणा को प्रतिपादित किया उन्होंने कहा कि गरीबी की संस्कृति एक गरीब पारंपरिक समाज की विशेषता नहीं है, बल्कि यह पूंजीवादी व्यवस्था पर आधारित एक विकसित समाज की विशेषता है। इस प्रकार की संस्कृति उस समाज में पायी जाती है जहाँ पूंजीवादी व्यवस्था के फलस्वरूप शोषण, बेरोजगारी, गरीबी है।
- सांस्कृतिक संघर्ष: जब दो समूहों या समुदायों के बीच कोई वैचारिक मतभेद या संघर्ष होता है, तो इसे 'संस्कृति संघर्ष' कहा जाता है। यह मध्ययुगीन (या जिहाद) संस्कृति संघर्ष का एक उदाहरण है। विश्वासों, विचारों, आदर्शों और विश्वासों के स्तर पर अक्सर दो समाजों के बीच संघर्ष या संघर्ष होता है, इसलिए यह कहा जा सकता है कि सांस्कृतिक संघर्ष शाश्वत संघर्ष की एक प्रक्रिया है।

<u>संस्कृति के कार्य</u>

संस्कृति समाज की वह उपलब्धि है, जो नित्य है; इसलिए एक व्यक्ति और पूरे समाज के जीवन में संस्कृति के कई कार्य हैं। संस्कृति के कार्य निम्नलिखित हैं-

- संस्कृति को सामाजिक संरचना का आधार माना जाता है।
- संस्कृति सामाजिक एकता की भावना का विकास करती है, जो राष्ट्रीय एकता की भावना को सहारा प्रदान करती है।
- व्यक्तियों की दृष्टि का विस्तार करें।
- व्यवहार पैटर्न और दूसरों के साथ संबंध प्रदान करें।
- व्यक्तिगत व्यवहार को अक्षुण्ण रखें।
- राष्ट्रीय चरित्र को ढालता है।
- मिथकों, किंवदंतियों, सुपर प्राकृतिक विश्वासों को परिभाषित करें।
- नई जरूरतें और रुचियां पैदा करता है।
- प्रजनन और पारस्परिक समर्थन के लिए एक सामाजिक संरचना प्रदान करें।
- अपने सदस्यों की जैविक निरंतरता सुनिश्चित करता है।

<u>मानव जीवन पर संस्कृति का प्रभाव</u>

- संस्कृति मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति करती है
- व्यक्तित्व विकास में संस्कृति मौलिक है
- संस्कृति मानव की आदतों को निर्धारित करती है
- संस्कृति व्यवहार में एकरूपता लाती है
- संस्कृति मनुष्य को मूल्य और आदर्श प्रदान करती है

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A unit of RACE) YOUR SUCCESS OUR PRIORITY

- संस्कृति व्यक्ति को सुरक्षा प्रदान करती है
- संस्कृति समस्याओं का समाधान करती है
- संस्कृति स्थिति और भूमिका निर्धारित करती है

सामाजिक जीवन में संस्कृति की भूमिका

- संस्कृति समाज की संरचना निर्धारित करती है: समाज की संरचना संस्कृति द्वारा निर्धारित होती है, क्योंकि समाज में प्रथाएं, परंपराएं और मूल्य संस्कृति का उत्पाद हैं। संस्कृति से ही समाज की संरचना का निर्माण होता है, जो कि समाज की संरचना में संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थान है।
- सामाजिक संगठन की प्रकृति संस्कृति द्वारा निर्धारित होती है: सामाजिक संगठन वह व्यवस्था है जिसके माध्यम से पूरे समाज के अंग उद्देश्यपूर्ण रूप से जुड़े होते हैं। इन्हें जोड़े रखने में संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थान है। संस्कृति समाज के भौतिक और आध्यात्मिक भागों को आपस में जोड़ती है। परिवार और धार्मिक संस्थाएं, परिवार और बाजार, राष्ट्र और नागरिक भाषा, व्यवहार को नियंत्रित करने वाली शिष्टाचार प्रणालियां आदि।
- संस्कृति सामाजिक नियंत्रण में मदद करती है: प्रत्येक संस्कृति में रीति-रिवाज, लोकाचार, परंपराएं आदि होती हैं। ये व्यक्ति के आचरण और व्यवहार को निर्धारित करते हैं और व्यक्ति पर नियंत्रण बनाए रखते हैं। सामाजिक नियन्त्रण केवल वैयक्तिक नियन्त्रण से ही रहता है।
- संस्था का निर्माण: विभिन्न समाजों की संस्थाओं के बीच अंतर होता है; यह अंतर उनकी संस्कृति के कारण है क्योंकि संस्थान गैर-भौतिक संस्कृति के आधार पर बनाए गए हैं। किसी भी समाज की संस्कृति यह निर्धारित करती है कि वह सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक राजनीतिक संस्थाओं की तरह कैसा होगा।
- स्तरीकरण: विभिन्न समाजों में व्यक्तियों के विभिन्न स्तरों का निर्धारण किया जाता है। भारतीय समाज को मुख्य रूप से लिंग, आयु वर्ग, धन, जाति के आधार पर स्तरीकृत किया गया है। उदाहरण के लिए भारत में स्तरीकरण को वर्ण व्यवस्था के आधार पर वर्गीकृत किया गया था और कुछ आदिवासी समाजों में महिलाओं का उच्च स्थान है, इसलिए हम कह सकते हैं कि सांस्कृतिक मूल्य समाज में स्तरीकरण का आधार हैं।

सांस्कृतिक अंतराल

यह शब्द 1922 में समाजशास्त्री विलियम एफ। ओगबर्न द्वारा गढ़ा गया था। ऑगबर्न की एक अवधारणा है कि भौतिक संस्कृति गैर-भौतिक संस्कृति की तुलना में तेजी से बदलती है। इस कारण भौतिक संस्कृति का विकास हुआ और अभौतिक संस्कृति से संबंधित या उस पर निर्भर परिवर्तन की गति धीमी रही, इस स्थिति को ऑगबर्न सांस्कृतिक पिछड़ापन कहा जाता है। सांस्कृतिक अंतराल यह धारणा है कि संस्कृति को तकनीकी नवाचारों को पकड़ने में समय लगता है, और सामाजिक समस्याएं और संघर्ष इस अंतराल के कारण होते हैं।

संस्कृति और सभ्यता के बीच संबंध

जिसे हम सभ्यता मानते हैं वह भी एक संस्कृति है। रेलवे, विमान जहां सभ्यता का हिस्सा हैं, वहीं इनके निर्माण में भी संस्कृति है। मानव जीवन में सभ्यता और संस्कृति की यात्रा समानांतर है। इन दोनों सम्बन्धों को मैकाइवर एवं पेज ने निम्न रूपों में व्यक्त किया है-

- सभ्यता संस्कृति की वाहक है: संस्कृति एक समाज से दूसरे समाज में सभ्यता के द्वारा ही हस्तान्तरित होती है। संस्कृति के प्रसार में परिवहन एवं संचार के साधनों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। संचार के साधनों के

विकास का अभिव्यक्ति के उन साधनों पर गंभीर प्रभाव पड़ा है, जो सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए आवश्यक हैं; इसलिए सभ्यता को संस्कृति का वाहक कहा जाता है।

- सभ्यता सांस्कृतिक गतिविधियों को सशक्त बनाती है: सभ्यता अप्रत्यक्ष रूप से संस्कृति के विकास में मदद करती है। उत्पादन के साधनों की मात्रा में जितनी वृद्धि हुई है, संस्कृति का उतना ही विकास हुआ है। उन संसाधनों के अभाव में मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए निरन्तर प्रकृति से संघर्ष करता रहता है और वह संस्कृति के विकास में कम समय दे पाता है। आविष्कार और प्रौद्योगिकी के विकास के कारण मानव में समय और श्रम की बचत हुई और इसका उपयोग संस्कृति के उत्थान में किया गया। इस प्रकार सभ्यता के विकास ने प्रकृति पर विजय प्राप्त करने और संस्कृति को समृद्ध बनाने में मनुष्य का महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- सभ्यता संस्कृति का पर्यावरण है: किसी संस्कृति की विशेषताएं सभ्यता द्वारा बनाए गए पर्यावरण से प्रभावित होती हैं। आज के मशीनी युग की संस्कृति अतीत के बैलगाड़ी युग की संस्कृति से भिन्न है, क्योंकि दोनों युगों की सभ्यता के भौतिक उपकरण एक जैसे नहीं हैं। औद्योगीकरण और शहरीकरण के फलस्वरूप जन्मी सभ्यता ने हमारी संस्कृति को नई दिशा देने में विशेष भूमिका निभाई है।

  औद्योगीकरण से पहले समाज में प्रचलित धर्म, रीति-रिवाज, परिवार, विवाह, लोकाचार, विश्वास, विचार, व्यवहार, नैतिकता और मूल्य वर्तमान समय के औद्योगिक और जटिल समाजों से अलग थे। मानव रॉकेट के माध्यम से चंद्रमा पर पहुंचा और इसने हमारे धार्मिक विचारों को ही बदल दिया। अब चन्द्रमा को देवता के स्थान पर उपग्रह माना जाता है। उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि सभ्यता संस्कृति के लिए वातावरण का निर्माण करती है।

- संस्कृति सभ्यता की दिशा को प्रभावित करती है: जिस प्रकार सभ्यता संस्कृति को प्रभावित करती है, उसी प्रकार संस्कृति सभ्यता की दिशा को भी निर्धारित करती है। एक समाज की संस्कृति क्या है? इसके सामाजिक-धार्मिक मूल्य, प्रथाएं किस प्रकार हैं? धर्म, दर्शन, नैतिक मॉडल के प्रकार क्या हैं? इन्हीं के आधार पर चीजें बनाई जाती हैं। हम किस टूल का उपयोग कैसे करेंगे? यह वहां के कल्चर पर निर्भर करता है। जैसे जहाज सभ्यता का हिस्सा है, लेकिन बनेगा कैसे? वह कैसे काम करेगा? आप किन बंदरगाहों पर रहेंगे? यह उस समाज के सांस्कृतिक मूल्यों पर निर्भर करता है। कपड़े सभ्यता का हिस्सा हैं, लेकिन वे कैसे बनेंगे? यह हमारी संस्कृति द्वारा निर्धारित होता है।

<u>संस्कृति और सभ्यता के बीच संबंध</u>

संस्कृति सभ्यता का अंग है। समुदाय की विविध संस्कृति सभ्यता बनाने के लिए एक खंड के रूप में कार्य करती है। संस्कृति और सभ्यता एक दूसरे से जुड़े हुए हैं कि संस्कृति विकसित सभ्यता के लिए एक पूर्व शर्त है, और सभ्यता सांस्कृतिक उन्नति के लिए एक मंच का प्रतिनिधित्व करती है। दोनों आकस्मिक हैं, और दोनों में परिवर्तन दूसरे में भिन्नता की ओर ले जाता है।

संस्कृति और सभ्यता को अभिव्यक्ति के किसी माध्यम की आवश्यकता होती है, जैसे समाज, हालांकि मूर्त या अमूर्त। उनके अस्तित्व को प्रदर्शित करने के लिए साधनों की आवश्यकता है; यह क्रियाओं, प्राथमिकताओं, व्यवहार आदि के माध्यम से भी हो सकता है। किसी भी राष्ट्र या समाज की संस्कृति और सभ्यता वहां रहने वाले लोगों को परिभाषित करती है। यह दूसरे लोगों को उन्हें जानने में मदद करता है कि वे कहां से आए हैं। जैसे, भारतीय संस्कृति बहुत

समृद्ध है, और हमारे यहाँ सब कुछ की विविधता है। भारत के बाहर के अधिकांश लोग इसे पसंद करते हैं और यहाँ की संस्कृति के कारण इसे देखने आते हैं; लोगों के बारे में अधिक जानने के लिए।

हाल के दशकों में संस्कृति और सभ्यता के "मोटे विवरण" पर जोर दिया गया है, जो हमें यह विश्वास करने के लिए मजबूर करता है कि संस्कृतियां और सभ्यताएं हवा में तैरने वाले तत्व नहीं हैं, बल्कि सीधे तौर पर अच्छी तरह से स्थापित भौगोलिक और सांस्कृतिक कोडों में निहित हैं। वे उस समय के राजनीतिक और धार्मिक संघर्षों को समाहित करते हैं और तेजी से अतुलनीयता, सापेक्षतावाद और परिप्रेक्ष्यवाद के लिए दिए जाते हैं। लेकिन संस्कृतियां, भाषाएं, सभ्यताएं और परंपराएं अतुलनीय नहीं हो सकतीं।

<u>संस्कृति बनाम सभ्यता</u>

- संस्कृति सभ्यता के भीतर मौजूद है क्योंकि यह कुछ व्यक्तियों या समूहों का व्यवहारिक पहलू है, लेकिन सभ्यता एक विशाल समुदाय है जो कई संस्कृतियों से बना हो सकता है
- संस्कृति और सभ्यता के कालक्रम में काफी भिन्नता है
- संस्कृति सभ्यता से पहले विकसित हुई थी
- संस्कृति एक निश्चित सभ्यता के बिना मौजूद हो सकती है, लेकिन यह एक निश्चित संस्कृति के बिना मौजूद नहीं हो सकती
- संस्कृति मूर्त और अमूर्त रूपों में मौजूद है, जबकि सभ्यता के विभिन्न कमोबेश मूर्त पहलू हैं।
- संस्कृति पीढ़ी-दर-पीढ़ी स्थानांतरित होती है और इस प्रकार इसे आगे बढ़ना नहीं कहा जा सकता है, लेकिन सभ्यता हमेशा विकसित होती रहती है
- सभी समाजों में संस्कृति शामिल है, लेकिन कुछ ही समाजों में सभ्यता शामिल है
- संस्कृति और सभ्यता के अलग-अलग विस्तार हैं
- संस्कृति सभ्यता का एक हिस्सा है जबकि सभ्यता विभिन्न संस्कृतियों को जोड़ती है
- संस्कृति को मापने के लिए कोई मानक नहीं हैं, लेकिन सभ्यता का एक अमूर्त माप मानक है
- संस्कृति एक अंत है; इसका कोई माप मानक नहीं है। इसके विपरीत, सभ्यता के सटीक माप मानक हैं, क्योंकि यह एक साधन है।
- सभ्यता की तुलना में संस्कृति अधिक स्थिर है-सांस्कृतिक परिवर्तन वर्षों या सदियों में होता है लेकिन सभ्यता बहुत तेजी से बदलती है।
- संस्कृति सभ्यता से छोटी है, सभ्यता बड़ी इकाई है
- संस्कृति सभ्यता के बिना विकसित हो सकती है लेकिन सभ्यता संस्कृति के बिना विकसित नहीं हो सकती।
- संस्कृति एक अमूर्त अवस्था में है जबकि सभ्यता एक मूर्त अवस्था में है
- संस्कृति का आसानी से मूल्यांकन नहीं किया जा सकता लेकिन सभ्यता का मूल्यांकन किया जा सकता है।
- संस्कृति की कोई निश्चित दिशा नहीं होती और वह हमेशा आगे नहीं बढ़ती बल्कि सभ्यता हमेशा आगे बढ़ती है।
- संस्कृति का संबंध मानव के विचार और आंतरिक गुणों से है जिसमें परिवर्तन या सुधार बिना परिश्रम के संभव नहीं है, जबकि सभ्यता भौतिक वस्तुओं से संबंधित है जिसमें परिवर्तन और सुधार करना आसान है।
- व्यक्ति का संस्कृति से मानसिक लगाव होता है लेकिन सभ्यता से कोई लगाव नहीं होता।